(iv) Memorandum of Understanding between the Government of India (Department of Telecommunications, Ministry of Communications) and the Mahanagar Telephone Nigam Limited (MTNL), for the year 2019-20. [Placed in Library. *See* No. L.T. 552/17/19]

MR. CHAIRMAN: Now, Shrimati Shanta Chhetri.

MATTERS RAISED WITH PERMISSION OF CHAIR — *Contd.*

Demand for reconsidering shifting of Lebong Military Hospital

SHRIMATI SHANTA CHHETRI (West Bengal): Thank you hon. Chairman, Sir, for allowing me to speak. I seek to draw the kind attention of this august House that as per reports, the Defence Ministry is planning to shift Lebong Military Hospital of Darjeeling to other States, that is, Assam, Arunachal Pradesh. This unfortunate shifting will hit hard on the retired Gorkha personnel. Furthermore, there is no ECHS; therefore, if this sole Hospital, which serves as a lifeline to the retired Gorkha personnel is shifted, then, retired Gorkha personnel will have to travel long distance to avail ECHS facilities. It would cause immense hardships to those valiant soldiers who have served our nation. What is more shocking is that the reason given by the Defence Ministry for shifting has been attributed to low bed occupancy. Sir, the reality is otherwise, the reason being that no specialist doctor has been posted there for a long time. The Defence Ministry should also study the fact that 158-bedded hospital cannot handle additional load at Lebong Hospital. It seems they themselves have a huge load of patients including huge number of outpatients. Therefore, Sir, I would like to humbly request the hon. Defence Minister to reconsider the shifting of Lebong Military Hospital, Darjeeling and immediately post specialist doctor for its best utilisation. By doing so, we will do our bit for the retired Gorkha personnel living in the Darjeeling District for their selfless service to the nation. Thank you, Sir.

SHRI RITABRATA BANERJEE (West Bengal): Sir, I associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI ABIR RANJAN BISWAS (West Bengal): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI SUBHASISH CHAKRABORTY (West Bengal): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

MS. DOLA SEN (West Bengal): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SHRI SWAPAN DASGUPTA (Nominated): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member.

SOME HON. MEMBERS: Sir, we too associate ourselves with the matter raised by the hon. Member.

MR. CHAIRMAN: It is good. Please, all these names to be associated. Now, Dr. Satyanarayan Jatiya.

Pollution free India

डा. सत्यनारायण जटिया (मध्य प्रदेश): माननीय सभापति जी, मैं जलवायु प्रदूषण की समस्याओं की विभीषिका की ओर सदन का ध्यान आकर्षित कर रहा हूँ। जलवायु में जो निरंतर प्रदूषण हो रहा है, उस कारण से हमारी प्रकृति का संतुलन निरंतर बिगड़ता चला जा रहा है। मौसम बदल रहा है, समय पर वर्षा नहीं होती है और समय पर वर्षा नहीं होने के कारण हमारी कृषि प्रभावित होती है। 'का बरखा, जब फसल सुखाने' सूखा हो जाता है, देश की अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव पड़ता है। इस पर संतुलन बनाने के लिए निश्चित रूप से, जैसा अभी कहा गया है कि नदियों को जोड़ने के उपाय प्रभावी रूप से करने की आवश्यकता है। यह बात बहुत पहले की गई है। अब इसे चरणबद्ध रूप से प्रारंभ करना चाहिए। वायु प्रदूषण निश्चित रूप से मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल है। मनुष्य के स्वास्थ्य को संभालकर रखने के लिए, अस्थमा तथा अन्य बीमारियों को संभालने के लिए भी यह जरूरी है कि वायु को प्रदूषणमुक्त बनाया जाए। हम देखते हैं कि सल्फर डाई-ऑक्साइड, H2S, नाइट्रोजन ऑक्साइड, नाइट्रोजन आदि गैसों से आज हमारे शहर प्रदूषित हो रहे हैं। गाँवों में भी प्रदूषण की स्थिति अलग प्रकार की बनी हुई है। नदियों का प्रदूषण हो रहा है, शहर के अवशिष्ट नदियों में मिलाए जा रहे हैं। एक समय में हम कहते थे कि हमारी नदियाँ पवित्र-प्रवाह हैं। *"गंगा, सिंधु, कावेरी, यमुना सरस्वती, रेवा महानदी, गोदा, ब्रह्मपुत्रश्च पुनातुमाम।"* परन्तु, ये नदियाँ, जो दिनों-दिन अशुद्ध होती चली जा रही हैं, उनको भी शुद्ध करने की आवश्यकता है। इस प्रकार, पृथ्वी को भी प्रदूषण से बचाना होगा। पृथ्वी के अंदर के जल में से अनेक प्रकार की विकृतियाँ आती हैं, जिसके कारण बीमारियाँ होती हैं। इसलिए पृथ्वी को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए, जल को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए और वायु को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए समयबद्ध कार्यक्रम बनाना चाहिए। हमने "स्वच्छता अभियान" चलाया हुआ है और निश्चित रूप से इस "स्वच्छता अभियान" के कारण जलवायु में सुधार हो रहा है, किन्तु इसको एक जन-अभियान के रूप में स्थापित करने का उपाय करना चाहिए।

मेरा केन्द्र सरकार से आग्रह है कि इस अभियान को और तेज गति से चलाकर इसमें हमारे जन-धन को, हमारे लोगों की शक्ति को इस ओर प्रेरित करने का काम किया जाए, ताकि हम अपने यहाँ की जलवायु को शुद्ध करने में सफल हो सकें, धन्यवाद।